भागीरथ ने लायी ज्ञान की गंगा

भागीरथ माना भाग्यशाली रथ। शरीर एक रथ है और आत्मा रथी। जब इस शरीर रूपी रथ से दिव्य शक्ति द्वारा दिव्य कर्म होते है तो उसे भागीरथ कहते। भागीरथ का दूसरा नाम भगवान का रथ भी कहते है। दुर्वासा ऋषि के श्राप से भागीरथ के 60 हजार पूर्वज जलकर मर गये थे। बड़ी क्षमा याचना के बाद उनको आश्वासन मिला की इन पूर्वजों का उद्धार के लिए गंगा को धरती पर लाना होगा, गंगा का इतना तीब्र वेग है कि उसको रोकने के लिए शिव को प्रसन्न करना होगा तभी गंगा नियंत्रित होकर इस पृथ्वी पर आयेगी और उसके पावन जल से पूर्वजों का उद्धार होगा। इस कठिन कार्य के लिए भागीरथ ने घोर तप किया और परमात्मा शिव प्रसन्न हुए और गंगा को लाने की अनुमति दी, और अपनी जटा विखेर कर उसको नियंत्रित कर पृथ्वी पर आने दिया जिसके पावन जल से 60 हजार पूर्वजों का उद्धार हुआ।

इसका आध्यात्मिक रहस्य है। आज के समय क्रोधी, कामी रावण के प्रभाव से काम, क्रोध के वश सारी सृष्टि घोर काम विकार में गिरने से मरने के समान है। काम के वशीभूत मनुष्यात्मा आज के दौर में अपने, पराये तथा पवित्र सम्बन्धों को भी कलंकित कर रहा है। ऐसे घिनौने कृत्य हो रहे है जो एक प्रेतात्मा भी नहीं कर सकती। अज्ञान नींद में कुम्भकरण की भांति सोये पड़े है। अज्ञान अंधकार इतना घोर हो चुका है कि ज्ञान प्रकाश का नामोनिशान नहीं दिख रहा है। जीवन पशु से भी बदतर हो गया है, कहने में अतिश्योक्ति नहीं होगी। इतनी हिंसक वृत्ति हो गयी है कि हिंसा करने वाला जानवर भी इतना हिंसा नही कर सकता। जीवित उसको कहा जायेगा जो ज्ञानी, सदमार्गी तथा चरित्रवान हो। जिसके अन्दर ज्ञान की पराकाष्ठा है वही सच्चे अर्थो में जीवित है। अब बुरे कर्मों से मरे मनुष्यों को पुन: जीवित करने के लिए ज्योति विन्दु स्वरूप ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के शरीर रूपी रथ का आधार लेकर ज्ञान की गंगा बहा रहे है। इस ज्ञान गंगा में स्नान करने से तन और मन दोनो का काया कल्प हो जायेगी और 21 जन्म तक हम अमर हो जायेंगे।

शास्त्रों में वर्णित है कि गंगा शिव जी के जटाओं से निकली है अर्थात परमात्मा शिव साकारी प्रजपिता ब्रह्मा के कमल मुख से ज्ञान की गंगा बहाये जिसे धारण करने से मनुष्य रावण के श्राप से मुक्त हो रहे है। परमात्मा पुन: जगा रहे है कि हे आत्माओं उठो तुम पूर्वज हो अपने आदि-अनादि स्वरूप को जानो और मुझे पहचानो तभी तुम्हारा उद्धार होगा। आत्मा अजर-अमर अविनाशी है, कभी मरती नहीं। केवल शरीर मरता है। जो मनुष्य इसको अच्छी तरह जान लेता है वह जीवन, मृत्यु, भय, दु:ख, संताप से मुक्ति पा लेता है। इसको जानने से मनुष्य समाधान स्वरूप बन जग उद्धारक बनता है। परमात्मा शिव जो ज्ञान की गंगा बहा रहे है इसमें स्नान करने से अन्दर की बुराईयों रूपी कीचड़ों की पूर्ण सफाई हो जाती है और वह सच्चे हीरे समान चमकने लगता है। हीरा कितना भी कीचड़ों के बीच हो परन्तु वह चमकता रहता है। यह संसार मुर्दों का कीचड़ा घर बन गया है इसमें आप भी इसे अपनाकर हीरे समान चमकते रहिये।

सतयुग में सर्व मनुष्य आत्मायें सतोप्रधान होती है। वे सोलह कला सम्पूर्ण होती है उनके निर्विकारिता अपने पूर्ण ऊंचाईयों पर होता है। उन्हें शरीर और आत्मा का सम्पूर्ण ज्ञान होता है इसलिए वहाँ दु:ख नहीं होता है। वहां एक शरीर छोड़ दूसरा शरीर बड़ी आसानी से लेते है। इसमें सतोप्रधानता होने के कारण

मनुष्यों द्वारा किया गया कर्म अकर्म होता है। उसका पाप पुण्य नही बनता है। द्वापर और कलियुग से कोई भी मनुष्यात्मा पाप से मुक्त नहीं होती है। कलियुग में होने वाला कर्म विकर्म बनते है। क्योंकि यहाँ हर कर्म विकर्म बनते है। आत्मा में निर्बलता के कारण उसके द्वारा किये गये कर्मों में कहीं न कहीं स्वार्थ अवश्य होता है, और स्वार्थ की साया में हुआ कर्म विकर्म होता है। द्वापर से ही ये प्रक्रिया शुरू होती है। कलियुग आते-आते घोर पाप की सीढ़ी चढ़ जाती है। आत्मा पर पाप का जंक चढ़ जाता है। फिर मनुष्य घोर पाप करने लगता है। सतयुग, त्रेता में पवित्र आत्मायें होती है लेकिन द्वापर और कलियुग शनैः शनैः पतित बनती जाती है। इस पतितपना की अंधकार में इतनी गहरी डूब जाती है कि उनको स्वयं की तथा परमात्मा की पूर्ण रूप से विस्मृति हो जाती है। भारतीय संस्कृति पवित्र रिश्तों पर टिकी होती है वह धीरे-धीरे रिश्ते भी कलंकित होने लगते है। रावण का श्राप इतना तीव्र लगता है कि वह काम विकार की अग्नि में जल मरते है। यह केवल एक आत्मा की बात नहीं हो रही है। यह समयानुसार साकार सृष्टि में निवासित सर्व मनुष्यात्माओं की यही हाल होती है।

शास्त्रों में लिखा है कि भागीरथ सागर के पुत्र थे। 'सागर' यानि परमात्मा शिव के हम सब बच्चे हैं उनके आशिर्वाद से हम सतयुग और त्रेतायुग में पवित्र, सतोप्रधान और सुखी होते है। लेकिन द्वापर और कलियुग से रावण के श्राप यानि काम, क्रोध, लोभ, मोह के वशीभूत होकर बुरे कर्मों की डगर पर उतर आते है। एवं बुरे कर्म करते-करते एकदम पतित बन जाते है और कामाग्नि में जल मरते है। परमात्मा के सर्वश्रेष्ठ पुत्र प्रजापिता ब्रह्मा है जो जिनके ऊपर पुनः इनके उद्धार करने की जिम्मेवारी बनती है। इसलिए इनका पूर्ण उद्धार करने के लिए परमात्मा शिव पुनः प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर उनके मुख से ज्ञान की गंगा बहाते है। और यही याद दिलाते है कि तुम मेरे वंशज हो, पुत्र हो। ये आसुरी संस्कार तुम्हारा नहीं बल्कि ये रावण के श्राप के कारण अपना समझ रहे हो इसलिए दुःखी और अशांत हो गये हो। तुम्हारे कर्मों से सारा जहाँ प्रकाशित होता है। हमारे वर्से के अधिकारी बनो इसके लिए तुम्हें रावण के स्वभाव को त्याग कर अपने निजी गुण व स्वभाव प्रेम, पवित्रता, आनन्द, शान्ति और सच्चा सुख है। इसलिए इसे अपने में अपनाओं और पुनः दैवी गुणधारी बनो।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com